



सभी के लिए सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवा

12 अगस्त 2026

पिछले 12 वर्षों में, भारत सरकार ने देश की स्वास्थ्य व्यवस्था को काफी मजबूत किया है। अच्छी गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएँ पहले की तुलना में अधिक सुलभ, सस्ती और समान रूप से उपलब्ध हैं। यह आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास" के सिद्धांत के अनुरूप है।

आयुष्मान भारत

- आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी-पीएमजेएवाई) समाज के सबसे गरीब 40% परिवारों और 70 वर्ष या उससे अधिक आयु के सभी वरिष्ठ नागरिकों को प्रति परिवार प्रति वर्ष 5 लाख रुपये का स्वास्थ्य बीमा प्रदान करती है।
 - 1,900 से अधिक उपचार पैकेजों के लिए हर दिन 40,000 से अधिक दावों का निपटान किया जाता है।
 - 2018 में योजना शुरू होने के बाद से, 12 अगस्त 2026 तक:
 - i. 45.5 करोड़ आयुष्मान कार्ड जारी किए गए हैं।
 - ii. 12.69 करोड़ बार अस्पताल में भर्ती होने की सुविधा दी गई है, जिसकी कुल लागत 1.92 लाख करोड़ रुपये है (30 जून 2026 तक)।
 - iii. 38,466 से अधिक सरकारी और निजी अस्पतालों को योजना से जोड़ा गया है।
 - iv. आयुष्मान भारत वय वंदना योजना के तहत 1.20 करोड़ वरिष्ठ नागरिकों का नामांकन किया गया है। 3,000 करोड़ रुपये मूल्य के 13.84 लाख से अधिक उपचारों का लाभ उठाया गया है।
 - v. एबी पीएम-जेएवाई के तहत, (30 जून 2026 तक) 29.05 लाख एक राज्य से दूसरे राज्य में अस्पतालों में इलाज को मंजूरी दी गई है, जिसकी कुल राशि 8,383.97 करोड़ रुपये से अधिक है।

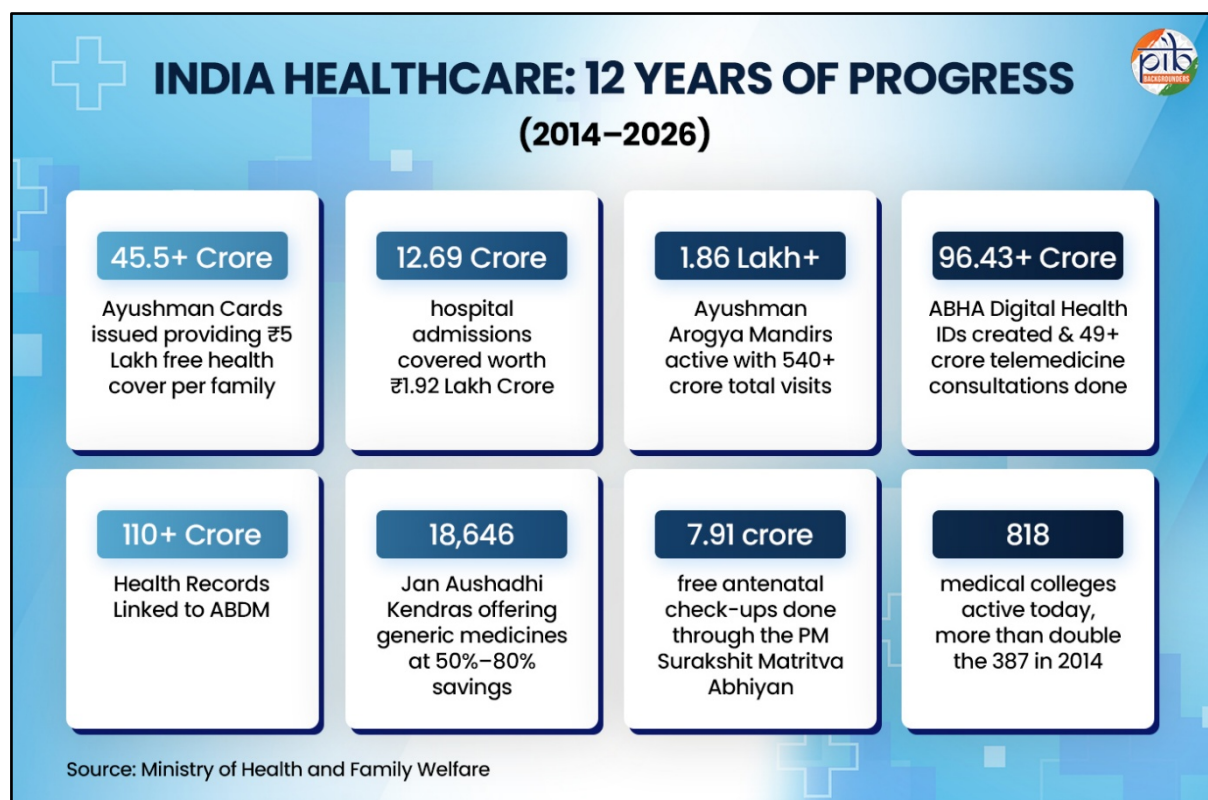
- देश भर में हर इलाके में प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं देने के लिए अब **1.86 लाख** से ज़्यादा **आयुष्मान आरोग्य मंदिर (एएएम)** काम कर रहे हैं (12 अगस्त 2026 तक)। ये केंद्र **12 तरह की मुफ्त सेवाएँ** देते हैं और अब तक यहाँ **कुल मिलाकर 540 करोड़ से ज़्यादा लोग** आ चुके हैं।

- प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन (पीएम-एबीएचआईएम):**

- 10 खास फोकस वाले राज्यों में 23,224 ग्रामीण हेल्थ और वेलनेस सेंटर के लिए मदद।
- सभी राज्यों में 13,736 शहरी हेल्थ और वेलनेस सेंटर बनाना।
- 11 खास फोकस वाले राज्यों में 3,389 ब्लॉक पब्लिक हेल्थ यूनिट बनाना।
- सभी ज़िलों में 744 एकीकृत जन स्वास्थ्य लैब बनाना।
- 5 लाख से ज़्यादा आबादी वाले सभी ज़िलों में 631 क्रिटिकल केयर हॉस्पिटल ब्लॉक बनाना।

- और इन सबके पीछे भारत की डिजिटल स्वास्थ्य प्रणाली, **आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम)** है। एबीडीएम के तहत कवरेज (12 अगस्त 2026 तक):

- 96.43 करोड़ आभा** हेल्थ आइडेंटिटी नंबर बनाए गए।
- 110 करोड़ से ज़्यादा** हेल्थ रिकॉर्ड आभा से जोड़े गए।
- इस प्लेटफॉर्म पर **5.46 लाख से ज़्यादा स्वास्थ्य सुविधाएं** पंजीकृत की गईं।
- इस प्लेटफॉर्म पर **10.50 लाख से ज़्यादा स्वास्थ्य पेशेवर** पंजीकृत किए गए।



राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन: खास स्वास्थ्य पहल

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम), अपने दो उप-मिशनों, **राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन और राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन** के ज़रिए ऐसे खास कार्यक्रम चलाता है, जो कुछ खास बीमारियों, आबादी और स्वास्थ्य चुनौतियों पर ध्यान देते हैं। एनएचएम ने माँ और बच्चे की सेहत, बीमारियों को खत्म करने और टीकाकरण के मामलों में सार्वजनिक स्वास्थ्य के नतीजों को काफी बेहतर बनाया है।

माँ और बच्चे की सेहत: सुरक्षित प्रसव की प्रक्रिया को सामान्य बनाना

- **प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान** के तहत **7.91 करोड़ से ज़्यादा मुफ्त प्रसव-पूर्व जाँचें** की गई हैं।
 - 1.24 करोड़ से ज़्यादा ज़्यादा जोखिम वाले गर्भावस्था के मामलों की पहचान की गई है।
 - भारत में पहली तिमाही में प्रसव-पूर्व रजिस्ट्रेशन एनएफएचएस-4 (2015-16) के 58.6% से बढ़कर एनएफएचएस-6 (2023-24) में 76.2% हो गया है।
 - भारत में चार या उससे ज़्यादा बार प्रसव-पूर्व देखभाल की सुविधा लेने वाली माताओं की संख्या एनएफएचएस-4 (2015-16) के 51.2% से काफी बढ़कर एनएफएचएस-6 (2023-24) में 65.2% हो गई है।
 - भारत में संस्थागत प्रसव यानी अस्पताल में डिलीवरी एनएफएचएस-4 (2015-16) के 78.9% से बढ़कर एनएफएचएस-6 (2023-24) में 90.6% हो गई हैं।
- टीकाकरण के मामले में, **सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम** हर साल **2.67 करोड़ नवजात शिशुओं और 2.9 करोड़ गर्भवती महिलाओं** तक 12 बीमारियों के खिलाफ मुफ्त टीके पहुँचाता है।
- 2014 में शुरू किया गया **मिशन इंद्रधनुष** एक छूटे हुए लोगों तक पहुँचने की मुहिम के तौर पर काम कर रहा है, जिसने अपने अलग-अलग चरणों में **5.46 करोड़ बच्चों और 1.32 करोड़ गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण** किया है।
- ज़ीरो-डोज़ वाले बच्चों यानी जिन्हें कोई भी वैक्सीन नहीं लगी थी, का **प्रतिशत 2023 में आबादी का 0.11% था, जो 2024 में घटकर 0.06% हो गया।**
- सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम (यूआईपी) के तहत, सरकार ने अक्टूबर 2024 में यू-विन लॉन्च किया, जोकि एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जो यह सुनिश्चित करता है कि किसी भी परिवार का टीकाकरण रिकॉर्ड न खोए। मार्च 2026 तक, **11.87 करोड़ बच्चे और 3.96 करोड़ गर्भवती महिलाएँ** इसमें पंजीकृत हो चुकी हैं।
- फरवरी 2026 में, सरकार ने सर्वाइकल कैंसर से लड़ने के लिए **14 साल की 1.2 करोड़ लड़कियों को मुफ्त एचपीवी वैक्सीन** देने के लिए तीन महीने का अभियान शुरू किया।

- पूरे देश में 52,10,302 लड़कियों को एचपीवी वैक्सीन लग चुकी है (15 जुलाई, 2026 तक)।
- इन पहलों से मृत्यु दर के कई आँकड़ों में सुधार हुआ है, जिनमें शामिल हैं:
 - मातृ मृत्यु दर 2014-16 में प्रति 1,00,000 जीवित जन्मों पर 130 थी, जो 2022-24 में घटकर 87 हो गई।
 - नवजात मृत्यु दर 2015 में प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर 28 थी, जो 2023 में घटकर 17 हो गई।
 - 5 साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर 2015 में प्रति 1,000 जीवित जन्मों पर 48 थी, जो 2023 में घटकर 28 हो गई।

संक्रामक बीमारियों को खत्म करना: लंबे समय से चली आ रही समस्याओं पर वास्तविक प्रगति

- सरकार ने पिछले 12 वर्षों में संक्रामक बीमारियों के प्रसार को कम किया है।
- भारत में हर साल सामने आने वाले तपेदिक के नए मामलों में 2015-2024 के बीच 21% की कमी आई है; इसी अवधि में तपेदिक से होने वाली मौतों में 28% की गिरावट आई है।
 - टीबी के इलाज में सफलता की दर 2021 में 83% से बढ़कर 2025 में 90% हो गई है और इलाज का कवरेज 53% (2015) से बढ़कर 92% (2024) हो गया है।
 - दिसंबर 2024 से शुरू हुए तेज़ अभियानों के तहत अब तक 28.1 करोड़ से ज़्यादा लोगों की स्क्रीनिंग की जा चुकी है, 20 लाख लोगों को बचावकारी इलाज दिया गया है और 5.7 लाख नए निक्षय मित्र जोड़े गए हैं।
- 2015 और 2023 के बीच मलेरिया के मामलों और मौतों में क्रमशः 80.5% और 78.38% की कमी आई है। भारत 2024 में मलेरिया के लिए डब्ल्यूएचओ के 'हाई बर्डन टू हाई इम्पैक्ट (एचबीएचआई) समूह' से बाहर निकल गया।

गैर-संक्रामक बीमारियाँ: समस्याओं का जल्द पता लगाना

- गैर-संक्रामक बीमारियों की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपी-एनसीडी), गैर-संक्रामक बीमारियों (एनसीडी) के लिए बुनियादी ढांचे को मजबूत करने, मानव संसाधन विकास, स्क्रीनिंग, शुरुआती पहचान, रेफरल, इलाज और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करता है। देशव्यापी स्क्रीनिंग अभियानों के माध्यम से:
 - उच्च रक्तचाप के लिए 41.5 करोड़ लोगों की स्क्रीनिंग की गई

- मधुमेह के लिए 41.3 करोड़ लोगों की स्क्रीनिंग
- मुंह के कैंसर के लिए 35.3 करोड़ लोगों की स्क्रीनिंग
- स्तन कैंसर के लिए 16.5 करोड़ लोगों की स्क्रीनिंग की गई।
- **प्रधानमंत्री राष्ट्रीय डायलिसिस कार्यक्रम** (2016 में शुरू) के तहत **1,856 केंद्रों पर 32.44 लाख मरीजों** को मुफ्त डायलिसिस की सुविधा दी गई है (जून 2026 तक)।
- **टर्शियरी कैंसर केयर सेंटर सुविधाओं को मज़बूत करने की योजना** के तहत, 19 राज्य कैंसर संस्थान (एससीआई) और 20 तृतीयक कैंसर देखभाल केंद्र (टीसीसीसी) को मंजूरी दी गई है।
- गैर-संचारी रोगों की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत, देश भर में **770 ज़िला एनसीडी क्लीनिक, 524 डे केयर कैंसर सेंटर (डीसीसीसी) और कम्युनिटी हेल्थ सेंटर में 6,410 एनसीडी क्लीनिक** स्थापित किए गए हैं।
- ग्लोबल एडल्ट टोबैको सर्वे (जीएटीएस-2) के दूसरे दौर की रिपोर्ट के अनुसार, भारत ने 2009-10 से 2016-17 के बीच कुल तंबाकू के इस्तेमाल में **17.3% की सापेक्ष कमी** हासिल की है।
 - तंबाकू-मुक्त पीढ़ी बनाने के लिए, सरकार ने 2023 में टोबैको मुक्त युवा अभियान शुरू किया, जो अब अपने तीसरे चरण में है। इस काम के लिए भारत को तंबाकू नियंत्रण के लिए **2025 का ब्लूमबर्ग फिलैंथ्रोपीज़ अवार्ड** मिला है।

दवाओं और जांचों को हकीकत में सस्ता बनाना

- **प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना (पीएमबीजेपी)** ने जेनेरिक दवाओं को सस्ता बनाया है। जिन **जनऔषधि केंद्रों** पर ये दवाएं मिलती हैं, उनकी संख्या 2014-15 में महज चंद स्टोर से बढ़कर फरवरी 2026 तक **18,646 से ज़्यादा** हो गई है।
- ये दवाएं **ब्रांडेड दवाओं की कीमतों से 50-80% कम** दाम पर बेची जाती हैं और इनमें **2,000 से ज़्यादा दवाएं और 300 सर्जिकल उपकरण** शामिल हैं।
- 2015 में शुरू की गई **अमृत (इलाज के लिए सस्ती दवाएं और भरोसेमंद इम्प्लांट) फार्मसी** भी आगे बढ़कर जीवन रक्षक दवाओं पर **50-90% की छूट** पर देती हैं, जिससे कम आय वाले मरीजों के लिए इलाज सस्ता हो जाता है, जिन्हें वरना इलाज नहीं मिल पाता।
 - इस योजना से **6.85 करोड़ से ज़्यादा मरीजों को लाभ** मिला है और अब तक एमआरपी पर **17,000 करोड़ रुपये से ज़्यादा की दवाएं** दी जा चुकी हैं, जिससे मरीजों की कुल बचत लगभग **8,400 करोड़ रुपये** हुई है।

- एनएचएम के तहत **मुफ्त डायग्नोस्टिक्स सर्विस** पहल से जन स्वास्थ्य प्रणाली के हर स्तर पर, उप केंद्रों से लेकर ज़िला अस्पतालों तक, परीक्षण, एक्स रे और ब्लड टेस्ट मुफ्त हो गए हैं। इसमें हेमेटोलॉजी, रेडियोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री और अन्य टेस्ट शामिल हैं।

- जन स्वास्थ्य सुविधाओं के सभी स्तरों पर डायग्नोस्टिक्स सेवाएं मुफ्त दी जाती हैं:

- उप केंद्रों पर 14 टेस्ट
- प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर 63 टेस्ट
- सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों पर 97 टेस्ट
- सब-डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल में 111 टेस्ट
- ज़िला अस्पतालों में 134 टेस्ट

लोगों तक उनकी जगह पर पहुँचना: डिजिटल स्वास्थ्य और टेलीमेडिसिन

- भारत के राष्ट्रीय टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्म, **ई-संजीवनी** ने 2019 में अपनी शुरुआत के बाद से अब तक **49 करोड़ से ज़्यादा परामर्श** दिए हैं (11 अगस्त, 2026 तक)। अब इस प्लेटफॉर्म पर **2.4 लाख से ज़्यादा स्वास्थ्य सेवा प्रदाता** मौजूद हैं।

- **टेली-मानस** —अक्टूबर 2022 में शुरू की गई और इसे एक टोल-फ्री हेल्पलाइन (14416) के तौर पर पेश किया गया था। यह पूरे देश में उपलब्ध है और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी कई तरह की सेवाएँ देता है।

- यह सभी 36 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में **20 भाषाओं** में काम करता है। इस सेवा के शुरू होने के बाद से अब तक 53 टेली-मानस सेल और 23 मेंटरिंग संस्थानों के ज़रिए **43.64 लाख कॉल** आ चुके हैं (11 अगस्त, 2026 तक)।

- 2021 में शुरू की गई **आई-ड्रोन** सेवा ड्रोन के ज़रिए दवाइयाँ और वैक्सीन पहुँचा रही है। **65 स्वास्थ्यसेवा केंद्रों** के ज़रिए **7,700 किलोमीटर** से ज़्यादा की दूरी तय करके **22,000 दवाइयाँ** पहुँचाई गई हैं।

- अब देखभाल पहुँचाने की प्रक्रिया में एआई को भी शामिल किया गया है। अप्रैल 2023 और नवंबर 2025 के बीच, **28.2 करोड़ ई-संजीवनी कंसल्टेशन** में एआई-समर्थित क्लिनिकल डिजीजन सपोर्ट सिस्टम की मदद ली गई, जिससे डॉक्टरों को रियल-टाइम क्लिनिकल अलर्ट मिले।

भारत की ज़रूरत के अनुसार कार्यबल तैयार करना

- पिछले 12 सालों में, मेडिकल कॉलेजों की संख्या दोगुनी से ज़्यादा हो गई है – एलोपैथी कॉलेजों की संख्या **387 से बढ़कर 818 हो गई है (2025-2026 तक)**।

- 2014 से 12 नए एम्स शुरू किए गए हैं। अब कुल 23 एम्स हैं।
- 2025-26 तक एमबीबीएस और पीजी सीटों की संख्या बढ़कर क्रमशः 1,28,976 और 85,822 हो गई है।
- नर्सिंग पर भी उतना ही ध्यान दिया गया है। 157 नए नर्सिंग कॉलेज बनाए जा रहे हैं, जिनसे हर साल लगभग 15,700 नर्सिंग ग्रेजुएट तैयार होंगे।
 - जून 2025 तक बी.एससी. नर्सिंग सीटें 53% बढ़कर 1,27,290 और एम.एससी. नर्सिंग सीटें 39% बढ़कर 14,986 हो गई हैं।

वैकल्पिक स्वास्थ्य सेवाएं

आधुनिक चिकित्सा के साथ-साथ, सरकार ने पारंपरिक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को जन स्वास्थ्य व्यवस्था में औपचारिक रूप से शामिल किया है। नवंबर 2014 में बने आयुष मंत्रालय (आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा-रिग्पा और होम्योपैथी) ने पारंपरिक चिकित्सा को भारत की स्वास्थ्य व्यवस्था का एक सक्रिय हिस्सा बनाया है।

- मई 2025 तक देश में 942 आयुष संस्थान हैं।
- आयुष ग्रिड पारंपरिक इलाज और आधुनिक हेल्थकेयर डिलीवरी के बीच भारत का डिजिटल पुल है, जो आयुष को ज़्यादा सुलभ, एकीकृत और भविष्य के लिए तैयार बनाता है। यह आयुष ग्रिड देश भर के सभी आयुष अस्पतालों और प्रयोगशालाओं को डिजिटल रूप से जोड़ेगा।

संदर्भ

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय

<https://aam.mohfw.gov.in/>

<https://abdm.gov.in/>

<https://dashboard.nha.gov.in/public/>

<https://esanjeevani.mohfw.gov.in/#/>

<https://nhm.gov.in/index1.php?lang=1&level=2&sublinkid=824&lid=220>

<https://nhm.gov.in/index1.php?lang=1&level=2&sublinkid=1218&lid=192>

<https://pmndp.mohfw.gov.in/en>

<https://telemas.mohfw.gov.in/telemas-dashboard/#/>

<https://idrone.icmr.org.in/about/>

<https://www.pib.gov.in/PressReleaseFramePage.aspx?PRID=1945739®=48&lang=2>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2258300®=3&lang=1>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2294278®=48&lang=1>

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2290627®=48&lang=1>
<https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetail.aspx?PRID=2292344®=5&lang=1>
<https://www.pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=147093®=3&lang=2>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2286947®=48&lang=2>
<https://static.pib.gov.in/WriteReadData/specificdocs/documents/2026/jan/doc202611749801.pdf>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2275402®=3&lang=1>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2243768®=48&lang=2>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2254227®=3&lang=2>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2286948®=3&lang=1>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2176322®=48&lang=2>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2246069®=3&lang=2>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2190300®=3&lang=2>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2292343®=48&lang=1>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2224522®=48&lang=2>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1919985®=3&lang=2>

आयुष मंत्रालय

<https://www.ayush.gov.in/>

संयुक्त राष्ट्र

<https://www.unicef.org/india/press-releases/un-report-highlights-great-strides-india-under-five-child-survival>

पीआईबी बैकग्राउंडर

<https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?NoteId=158798&ModuleId=3®=3&lang=1>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2241066®=3&lang=2>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2244661®=3&lang=1>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2124334®=3&lang=2>
<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2227410®=3&lang=1>

पीआईबी शोध

पीके/केसी/एनएस